

C.A-10/124
Delicate. - 5/-

न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश केन्द्र ग्वालियर

फ़0फ़0 - 199-2000 नि0 R-2307-III 2000

Handwritten notes and signatures in Hindi, including '23/11/00' and '23/11/00'.

हरेसिंह आत्मज हेमराजजी के अंजना नि0
अजीमाबाद पारदी तहसील धाचरोद जिला उज्जैन
विस्त -- आवेदक

बहादुरसिंह 2- पद्मसिंह पुत्रगण हेमराजजी -
निवारासीगण अजीमाबाद पारदी तहसील धाचरोद
-- अनावेदकगण

पुनरिक्षण आवेदन पत्र धारा 50 म0प्र0भू0र0संहिता -

25.7.2000

माननीय महोदय,
आवेदक अधिनस्थ योग्य न्यायालय अपर आयुक्त महोदय

के आदेश दिनांक 3-5-2000 फ़0फ़0 226/93-94 अपील से असंतुष्ट एवं दुखित
होकर निम्न कारणों के आधार पर पुनरिक्षण आवेदन अन्दर अवधि प्रस्तुत करते हैं-

- 1- यह कि अधिनस्थ योग्य न्यायालय का आदेश जेर निगरानी विधि एवं विधान के विपरीत होने से निरस्त किए जाने योग्य है।
- 2- यह कि अधिनस्थ योग्य न्यायालय रेकार्ड का अवलोकन किए बिना जेर निगरानी आदेश पारित करने में महान वैधानिक त्रुटि की है।
- 3- यह कि स्व0 हेमराजजी द्वारा अपने जीवनकाल में कभी भी वादग्रस्त भूमि रिस्थाडैन्ट को नहीं दी है, उनकी मृत्यु के पश्चात अनावेदक ने बिना किसी वैधानिक अधिकार के बंदोबस्त अधिकारी से उसके क्षेत्राधिकार के बाहर जाकर आदेश करवा लिया जो निरस्त किए जाने योग्य है।
- 4- यह कि अधिनस्थ योग्य न्यायालय ने बिना किसी आधार के यह मानने में त्रुटि की है कि वादग्रस्त भूमि अनावेदक को उनके पिता द्वारा दी गई है, न तो रेकार्ड में स्वत्व अंतरण का कोई प्रमाण है एवं न ही ऐसी कोई भी अधिनस्थ न्यायालय में आयी है इस कारण अधिनस्थ न्यायालय का आदेश निरस्त किए जाने योग्य है।
- 5- यह कि अधिनस्थ न्यायालय के आदेश ही विरोधाभासी है, एक ओर तो अधिनस्थ न्यायालय स्वत्व के अधिकार सिद्ध न्यायालय के होना -

Handwritten signature in blue ink.

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

आदेश पृष्ठ
भाग - अ

प्रकरण क्रमांक निगरानी 2307-दो/2000

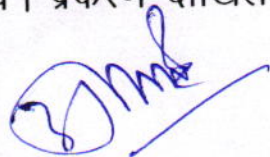
जिला उज्जैन

हटेसिंह

विरुद्ध

बहादुरसिंह आदि

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही अथवा आदेश	पक्षकों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
01-12-2015	<p>आवेदक अभिभाषक श्री एस0 कम्ठान अधिवक्ता द्वारा तर्क में बताया कि उनके पक्षकार हटेसिंह की मृत्यु हो चुकी है, परन्तु आवेदक अभिभाषक द्वारा आवेदक का मृत्यु प्रमाण पत्र अथवा वारिसान आवेदन प्रस्तुत नहीं किया गया। आवेदक अभिभाषक द्वारा आवेदक की मृत्यु कब हुई यह बतलाने में भी असमर्थता जाहिर की। अनावेदक अभिभाषक श्री एस0के0 वाजपेयी द्वारा अपने पक्षकार से काफी समय से सम्पर्क नहीं होने से कोई भी स्थिति बतलाने में असमर्थता व्यक्त की। चूंकि दोनों ही अभिभाषक को उनके पक्षकारों की ओर से कोई इन्स्ट्रक्शन प्राप्त नहीं हैं। यह प्रकरण वर्ष 2000 से लगभग लंबित है। अतः प्रकरण आवेदक की मृत्यु होने के बाद उसके वारिसानों के संबंध में कोई कार्यवाही नहीं करने के कारण अवैट किया जाता है। अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख वापस भेजे जायें। प्रकरण दाखिल रिकार्ड हो।</p>	



(डॉ० मधु खरे)
सदस्य